









माटे बरबारी अपेजाए सबै तमें साटि तने हुतसाय है अने असा-दुनी ज्यालप्त तथा सरज असादि मतीन जीतने कर्मवंतनी योग्यता-रूप परिणातिनी अपेजाए ने असाटि अने हुतसाय है.

मक्ष. १७-हे महाराज! आप जीवने, अनादि सहज मळरूप कमेबंबनी ये.राना कहोछो ने हो स्वरुपवाळी हो?

उत्तर-हे भव्य ! ने योग्यना जीवनुं कर्मवंवपणे परिणमन परि-णाम स्वरूप छे. जीव पदार्थ परिणामी छे, नेथीज नेने बंब मोक्ष होवा घटे छे. जो परिणाभी न होय तो मुक्ति के संसार बंने न होय; ते वैने जीवने होय छे: अनेग जड पदार्थने होता नथी. परिणामी न कहेवाय के जे शुद्ध वस्तु होय, पण समय समय उत्पाद व्यय ने स्थि-तिरुप त्रणे प्रकारनी वर्तनामय होय. जे पदार्थमां ए त्रण गुण न होय ते पदार्घनो त्रण भवनमां ने त्रणे काळमां अभावन होय. ने अमत्-पदार्य कहेवाय, ने नेनेज अपरिणामी जाणवी परिणामी आत्मा उत्पाद व्यय श्रीव्यमय छे नेशी जेम घट जाणवापणे उपजे नेम कीड अंग्रे उपज्या करे छै, सर्व अंग्रे सर्वया नवापणे कोड़ काळे उपजनी नयी अने जेम पर ज्ञानना नागशी घर ज्ञानी थाय छे तेम कोड अंगे विणस्या करे छै, सर्व अंगे सर्वया कोड काळ नाग पामनो नयी. तेमज जे काळभेदं घटपटने जाणतो उभयकाळ जानीपणे रहे छे तम कोइ अंग्रे स्थायी बन्यो रहे छे, मर्च अंग्रे सर्वया स्थिति रहेती नयी. आ प्रमाणे उत्पाद व्यय ने स्थितिमयपणुं ने परिणाम, अने एची परिणाम जेने होय ने परिणामी सहस्तु, जे अपरिणामी ने असहस्तु,



भावों तो आजाग्राण है, तेम आ अनादि भावों पण आगमगाण है, अन्यया तेमां घणो विरोध उपने नेतुं हो. नेम सूर्योदम विना दिवस होतो नधी अने सूर्यास्त विना रागि होती नथी एम मसिद्ध देखाय छ अने अनुमानथी पण सिद्ध थाय है के चंद्र सूर्यनी पछी दिनसने रात्रि छे, पण तेम नथी; जो तेम होय तो दिन राजिरूप काळ निना चंद्र सूर्य क्यारे थया ? ते विचारो परंतु काळ पण अनादि छ अने चंद्र स्यादिक ज्योतिष्कोना विमानी पण अनादि छे. ते विमानीना स्वामीपणे उपजना देवता जे पूर्वना होय छे ते पोतपोताना आयुष्यने पूर्ण करीने चवे छे अने नया नवा पुण्यवान् जीवो उपने छे. तेओ पोताना आयुष्य पर्यंत ते त्रिमानतुं स्वामीपणुं भोगवे छे. ए रीते देवता फरता जाय छे पण विमान वदलाता नथी; विमान तो अनादिना एना एज छे. अने ते निरंतर गमन क्रियात्राळा वर्चे छे. आ अही द्वीपमां स्थिरपणे रहेता नथी। भूलोकमां जे पकाश थाय छे ते तेना विषानोनी ज्योतिथी थाय छे; सूर्योदिक विषानमां रहेनारा देवताओना शरीरनो आ मकाश नथी. सूर्यना विमाननो मकाश आ जंबुद्दीपमां तेना विमानथी पूर्व तरफ ने पश्चिम तरफ साधिक ४७००० योजन सुधी होय छे. तेथी अधिक क्षेत्र तेनाथी प्रकाशतो नथी. एटले ४७००० नी अंदर आवे त्यारे ते छग्यो कहेवाय छे अने ४७००० थी दूर जाय त्यारे आथम्यो कहेवाय छे. तेज रात्रि दिनना विभागतुं तरण छे. ए सर्व अनादि लोकस्थिति स्वभावधी थाय छे माटे .. दि भावोमां पूर्व के पश्चिमनो विभाग होतो नथी. तथी आत्मा ?,



नेओ सर्वतज हो. जेनो अन्यंत अभाव हो ते कोइकाले पण भारणे हाता होयज नहीं—सर्व काले अहाताज होया जेम आकामनुं फुला पाटे जीव प्रमुख पदार्थोंनी आदि नथी—ते अनादिपणेज हाता एटले वियमान हो।

प्रश्न. २२-प्रयार्थ शब्दनो अर्थ शुं थाय छे?

उत्तर—'यथा' नाम जेम वर्ते हो, 'अर्थ' नाम परार्थ—तेम जाण माने ते 'यथार्थ.' जे सादिन सादिएणे, अनादिने अनादिएणे अने स्वाभाविकने स्वाभाविकपणे जाणे माने ते 'यथार्थ ज्ञानी ' अने जे अनेराने अनेरी जाणे—होय ते करतां जुदा स्वरुपे जाणे ते 'अज्ञानी.'

प्रश्न. २३ — हे महाराज! आत्मादिक पदार्थनी आदिनो अत्यंत अभाव सिन्द होवाधी जगत्नो छिष्टिवाद सर्वथा टकी जकतो नथी पण 'आ जगत् इश्वरकृत छे 'एम दुनियामां प्रसिद्ध छे तो तेनो सर्वथा निषेध केम करी शकाय ? तथी प्रभूतकाळ अगाउ इश्वरे आत्मादिक जगत्ना पदार्थो रच्या छे तथी कोइ तेनी आदि जाणी शकतुं नथी, तेने छीधे अनादि कहेवाय छे. पण इश्वरे जे काळे जीवादि रच्या ते काळनी अपेक्षाए तो ते सादि छे, पण अत्यंत अनादि नथी—एम मानवामां कांइ दोष छे ?

उत्तर—हे भन्य ! जो तमारा कहा प्रमाणे अति प्रभूतकाळ पहेलां पण इश्वरे आत्मादिक पदार्थ बनान्या होय 'तो ' तेम मानवामां मी-सना अभाव विना वीजी कांइ हरकत नथी। केमके इश्वरकृतने इश्वर-



पक्ष २९-हे महाराज ! ते " तथाभन्यता " शुं छे ?

उत्तम-हे भद्र ! ते " तथाभव्यता " अनादिनो जीवोने मोक्ष गमननी योग्यतारूप पारिणामिक भाव छे. ते मोक्षनी योग्यता सर्वे भन्य जीवोने स्वरूप मात्रे तो तुल्य छे पण सर्वे जीवनी समकाळे परिपक्व थती नथी; जुदे जुदे काळे परिपाक पामे छे. ते काळभेदे पाकवारूप विचित्रतावाळी होवाथी तेने तथाभन्यता कहेली छे. 'तथा' एटले ते ते पोतपोताना पाकवा योग्य क्रमागत काळने पामी पामीने पाकवाना स्वभाववाळी एवी जे "भव्यता " एटले मेक्षिगमननी योग्यता ते " तथाभन्यता" ते जीवने जुटा जुटा विचित्र मकारना काळांतरे पाके छे, तेथी सर्वे जीवोने सम्यग् दर्शनादि गुणोनी तथा मोसनी प्राप्ति समकाळे थती नथी. जो सर्व जीवोनी योग्यता साथे पाके तो गुण पाप्ति ने मोक्ष प्राप्ति सर्वने एक साथे थाय, पण तेम थतं नथी; माटे ए ज्यारे पाके त्यारे तेना जोरथी मिथ्यात्वादि पाप-कर्मतुं तथा अनादि कर्मवंधनी योग्यतानुं वळ घटी जवाथी जीव शुद्ध धर्म पामी शके, अने शुद्ध धर्म पापवाथी जन्म जरा मरणादि दुःखोनो अंत करी अजरामर पणुं पामे.

प्रश्न २०-हे महाराज! ते तथाभन्यता क्यारे पाके छे ? अने ते स्वभावेज पाके छे के कोइ साधन सेववाथी पाके छे ?

उत्तम-हे भव्य जीव ज्यारे पोताना चरम पुर्गळ परावर्तनरूप काळमां आवे त्यारे कोइ जीवनी तथाभव्यता स्वभावेज पाके छे अने घणा जीवोनी उपायना सेवनथी पाके छे.



तैजस ४, ने कार्मण ५, ए पांच गरीरपणे तथा एकेंद्रियादि सर्व जीवोए श्वासीश्वासपणे अने द्वीद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय ने पंचेंद्रिय जी-वोए भाषापणे तेमज पंचेंद्रिय एवा नारकी तिर्थंच मनुष्य ने देवताओए मनपणे ग्रहण करेला एवा पण अनंतानंत स्कंघो छे. ते सर्व पुर्गळोने कोइ एक जीव आहारक शिवायना वाकीना चार शरीरमांथी कोइ एक शरीरपणे, अथवा भाषापणे, अथवा श्वासोश्वासपणे, अथवा मनपणे प्रथम अपूर्वपणे ग्रहण मोचन करवावडे जेटला काळे ग्रही सुकी रहे तेटला काळने एक द्रव्य पुर्गळ परावर्तन कहीए. आवा पुर्गळ परावर्तन दरेक जीवने पूर्वे अनंता थयेला छे.

प्रश्न ३२-हे महाराज ! जीव घरम पुर्गळ परावर्तनमां शी रीते आबी शके ?

उत्तर—अनादि सहज परिणामथी जीव वे मकारना स्वभाववाळा होवाथी वे जातिना छे एक भवीजातिना ने बीजा अभवी जातिना. तेमां जे भवीजातिना छे तेमनामां मोक्षे जवानी योग्यतारूप स्वभावनी सत्ता अनादिथी रहेळी छे, तेथी तेमनी भवपरिणाति पलटाय छे, ने अभवीमां मोक्षे जवानी योग्यता न होवाथी तेमनी भवपरिणाति बद-स्टाती नधी; अनादिथी जेवी छे तेबी ने तेबीज रहे छे. एटले तेमना अनागत पुर्गळ परावर्तन ओछा थवाना नथी. भवीजीनोनी भवपरि-णाति बदलाय छे तेथी तेमना अनागत पुर्गळ परावर्तन ओछा ओछा कता जाय छे. तेमां भवीबोनी पण अनादिथी तो कर्मवंपनी योग्यता अतिशय अतिशय उत्कृष्ट संगिल्य परिणाममय घोर मिध्यान्य अवि-



पाकेळी न होवाथी यथार्थ तत्त्वजिज्ञासाना तेमने अभाव होय छेर चरम पुर्गळ परार्वत्तनमां आवेळ जीवन सद्धर्मने योग्य थाय छेर

मश्न ३३-हे महाराज! आपणे चरम पुर्गळ परावर्तनमां आ-च्या छीए के नहीं ? ते केम समजाय.

उत्तर—हे भव्य ! ते समजवा माटे आपणे ज्ञानदृष्टिए पोतानुं अंतःकरण तपासबुं के आपणने मोक्ष पामवानो अभिलाप, धर्म करवानो अभिलाप अने तत्त्व जाणवानो अभिलाप निव्याज पारमार्थिक भावथी उत्पन्न थयो छे के उपरचोटीयो छळ परिणामवाळो अभिलाप छे ? एम सत्यपणे आत्मसाक्षिए पोताना हृदयमां वारंतार तपामवां वर्णे अभिलाप परमार्थ रूपे छे एम भारते तो जाणवुं के आपणे चग्म पुर्गळ परावर्तनमां वर्ताए छीए.

प्रशास्त्र-हे मदाराज ! आपे प्रथम कहाँ के 'तथाभव्यता की-इक्की रुपाने पाके ने प्रणानी तो उपायसेपनथी पाके छे 'तो तेने प्रशासनों उपाय शुं छे ?

उत्तर-रेन पराप्तानी उपाय आ मनाण छे-मयम तो। पीताना इद्दरण प्री निर्मार करती के-मारी आत्मा निरामार है, अगर-ण है इज्याय छे, देवरे आ करामां पण रोजदिक के राजादिकती २०११ के कि रो पुत्र जनती भाषादिकतेंड मार्थ रतणकरी और नेव स्था नेवता होते पण ने आपदा आत्मा को के उपार आ ज रूपा ने इक्ट पूर्व यह शहरा नर्या नो पूर्व परम्मी आपदामां सेंद्र ने इपाय कु हुने हैं सुन शह शहरी मुझे बीतराम अर्थितर्ग, सिद्द निर्मे



जन्य परमानंद्रमय शुभ परिणाम प्राप्त थया नहोता, तेवा प्राप्त थवाशी तेने "अपूर्व करण " कहे छे. ए अपूर्व करणनी प्राप्ति थवाशी जीव तेना वडे ग्रंथिनो भेद करे. " ग्रंथि " ते अति निविड घन कठिन दुर्भेद्य मोक्षथी विमुख राखनार मिथ्यात्वना महाराग द्वेपने अज्ञानरूप परिणाम जाणवा तेनो भेद प्रथम कोइ काळे कर्यो नर्था मार्गानुसारी जीव अपूर्वकरणरूप तीव्र परिणामनी धारावडे भेदे-विदारे

प्रश्न. ३६- हे महाराज! आपे जणान्युं के 'ग्रंथि ते पिथ्यात्वना महा रागादि परिणाम छे ' तो भिथ्यात्व ग्रुं छे ?

उत्तर-भिध्यात्वतुं स्वरुष में उपर समजाव्युंज छे, उपरांत एटछुं विशेष समजवुं के-आत्माने असद् देव गुरुधभेमां तेमज विषरीत वस्तु-वादमां श्रद्धा-रुचि उपजावी तेने विषे रागी करनार, तेमज सद् देव गुरुधमेमां अने सुवस्तुवाद विषयमां अश्रद्धा-अरुचि उपजावी तेमने विषे देषी करनार मोहनीय कमना उदयनो जे परिणाम ते " मिथ्यात्व" छे.

मश्र. ३७-हे महाराज ! जेनाथी जीवना सर्वे दुःख नाश पामे एवा शुद्ध धर्मने आप प्रकाशित करो के जेथी ए दुष्ट मिथ्यात्व दूर जाय.

उत्तर-हे भद्र ! ए कहेवानो अवसरज हवे छे कारण के सम-कित पाम्या शिवाय शुद्ध धर्मनी प्राप्ति धती नधी तथी जीव समिकन केम पामे छे? ते प्रथम कहुं छुं-मार्गानुसारी जीवनी भव्यता पाकीने भीड शक्तिवाळी थाय छे अने तथी तेने अपूर्व करणना परिणामनी

आत्मभाव जाणवो. तेथी एने जीवादि तत्त्वोना स्वरूपनुं श्रवण कर-वाथी आत्मादिक पदार्थीना स्वरूपनी झळक भासमान थाय छे. एटले तेने कोइ उपदेशक पुरुष अथवा धर्मशास्त्र के जे, जीव पदार्थने अरिहंतोए उपदेशेला आगमनी रीते कथंचित् नित्य, कथंचित् अनित्य, कथंचित् शुभाशुभनो कत्ती, तेनो भोक्ता, अनादि उत्पाद व्यय धुवता युक्त, स्वभाव सिद्ध इत्यादिक रीते कहे ते संभवित है।वायी रुचे; अने कोइ उपदेशक अथवा शास्त्र जीवने सर्वेथा अतुत्पन्न, अविनष्ट, सदा स्थिर एक स्वभावे नित्य, अथवा सर्वथा क्षणस्थायि अनित्य, सर्वथा नास्ति, सर्वथा सामान्य, सर्वथा विशेष, सर्वन्यापि एक अथवा देहादिक ग्रुभाग्रुभनो अकत्ती, प्रकृतिकृतनी भागी, शरी-रना एक देशमां रहेलो इत्यादि रूपे कहे तो ते असंभवित होवाथी स्त्रभावेज न रुचे. तथा मागीनुसारी पणामां जे देवगुरु पृजादि तद्धेतु अनुष्टान हता ते अमृतानुष्टान थड् जाय. अने लोकदृष्टिए कराता यमनियमादिक स्वरूपशुद्ध अनुष्टान ते एने परमार्थ दृत्तिए कराता अनुवंधशुद्ध अनुष्टान थायः

पछी उपशम समिकतरूप गुणथी मोटी स्थितिवाळी मिथ्या-त्वमोहनीयनी प्रकृति ने सत्तामां रहेली छे, ने उदय उदीरणामां आवी नथी, नेना सर्व दळीया दुष्ट रसथी भरेला छे, तेने उदयमां आव्या अगाउन परिणाम विशेपना प्रभावथी शोधी काढे. एटले तेनी त्रण प्रकारनी राशि करे. ते आ रीते—नेटला दळीयामांथी हिष्ट रसनो उत्पादक दुष्ट रस सर्त्रथा नष्ट यइ जाय तेनो पहेलो

न्त्रहेवामां आर्च्युं छे के अग्रुद्ध पुंजना उदयथी जीव सादि सांत मिथ्यात्वी होयः

औपशामिक सम्यक्त्वनी स्थिति अंतर्गृहर्त्तनील होय छे, तेथी ते स्थिति पूर्ण थतां जो शुद्ध पुंजनो उदय थाय तो जीव " क्षयो-पशमिक " सम्यग् दृष्टि थाय. ते स्थितिमां जो उत्कृष्ट पणे रहे तो असंख्याता काळ सुधी रहे. अने क्षयोपश्चम सम्यक्त्वमां वर्ततां कोइक जीव देशिवरितने पामे, कोइक सर्वविरितने पामे, कोइक जीव ए त्रणे पुंजोनो क्षय करीं शुद्ध अपाद्गाळिक "क्षायिक" समक्तित पामी, क्षपक श्रेणीए आरोही, सकळ मोहनीय, अंतराय, ज्ञानावरण, दर्शना-यरण ए चार कर्मोनो क्षय करी, वीतराग सर्वज्ञ थाय. अने पछी योग निरोध करी समग्र कर्म रहीत थइ तेज भवे मोक्षे जाय.

ए त्रणे प्रकारना सम्पान् दृष्टि जीवो वीतराम सर्वे अरिहंत देव विना अनेरा रामी द्वेपी छग्नस्थाने देव करीने मान्य करे नहीं, शुद्ध जिनाममना उपदेशक पंच महाव्रतथारी निरारंभी मुनिविना अनेरा महस्य पार्वस्थादिकोने गुरु भावे मान्य करे नहीं, अने दयाविशाल, पद्काय जीवोनी हिंसानो निषेधक, स्पाद्धादपणे सर्व वस्तुनो ज्ञापक अने वितराम सर्वे उपदेशेल-एवा धर्भ विना- आमवाक्त धर्म विना अन्य यज्ञ याजन, नदी सरोवर समुद्रादिकमां स्नान अने कन्या मो भूमिदानादिकने पुण्य हेतुपणे उपदेशक, मिथ्यादृष्टि छग्नस्थ-मणीत, एकांत नित्य के एकांत अनित्य वस्तुना ज्ञापक, एवा शास्त्रोक्त चर्मोने धर्मभावे मान्य करे नहीं। अरिहंतादिकथी अन्य देव गुरु

रिनत्यने तो ते घंटे नहीं निकी ने परिणामी होय तेन सर्वया निणम्या विना ने सर्वया उपज्या निना जेम द्य दिभिषण परिणामे हो तेम मृळ वस्तुन उत्तरोत्तर अन्यस्पे परिणामे. एटले संसारी अगुद्ध भीतन शुद्ध स्वस्प ब्रह्मपे परिणामे, पण जो अपरिणामी होय तो तेम घंटे नहीं. आ ममाणे ते समजी अके अने तेथी एकांत नित्य ने अपरिणामी जीवादिकने माननारा दर्शनो बंधमोक्षना विरोधी हो एम जाणे ते साथे एवा विरोधी अगुद्ध तत्त्वने कहेनाराना देव गुरु पण अगुद्धन होय एम समजी शके तेज रीते मकृतिनेज वंव मोक्ष मानवावाळा एटले सर्वथा आनित्य मानवावाळाने पण वंधमोक्षनो विरोध आवे हो एम ते समजी शके अने स्याद्वादरूपे वस्तु कहेनार दर्शननेज गुद्ध मानी तेनो स्वीकार करे.

प्रश्न. ३९-हे महाराज ! जे प्रमाणे अरिहंत, वीतराग सर्वज्ञ थाय छे तेज प्रमाणे अन्य जीवो पण वीतराग सर्वज्ञ थाय छे के कांड् न्युनपणे थाय छे ?

उत्तर-हे भव्य ! वीतराग सर्वेज्ञ सर्वे तुल्यज थाय छे.

प्रश्न. ४०-हे महाराज ! जो सर्व तुल्य थाय छे तो पछी अरि-इंतोने देव मानवा, तेमनी प्रतिमाओ कराववी, पुष्प अर्छंकारादिके चहुमानपूर्वक तेमनी पूजा करवी अने अन्य बीतराग सर्वज्ञोने देव-पणे न मानवा, तेमनी प्रतिमाओ न करवी इत्यादि लोकरुढी चाली आवे छे के तेमां कांइ हेतु छे ?

· उत्तर-हे भव्य ! जिनशासनमां अरिहंतोने अने अनेरा सर्वक्र



शज कार्य धार्य छै. वळी ते भाती अरिइंतोनी तथार्भव्यता परिपन्ध थाय छे त्यारे तेमनी सम्यक्त्वं माप्ति पण नियमा स्वल्प काळमां-सं-ख्याता भवमां सिद्धिदाथिनी, भगवर भावने निष्पन्न करती अने अन्य भवषोनी सम्पत्रत्व प्राप्तिथी विलक्षणतावाळी होय हे. तेमने तस्त्र-हान समजावतां उपदेशक गुरुने परिश्रम करवो पडतो नधी सहज कथन मात्रथी यथार्थ भास तेमना हृदयमां प्रष्टत्त थाय छे. तेवा सुकर वेषि स्वभाव गुणवडे ते मथम भवधीज स्वयं संबुद्ध होय छे. त्यां-थीज तेमने एवी भावना मवर्त्त थाय छे क-"अहो । आवो जैन धर्मनी मकाश छतां आ संसारी जीवो घोर महांधकारमां भूळा भमे छे ते महा आश्चर्य छे ! तेथी हुं मवळ उद्यम करीने ए मोहांधकारमांथी ते सर्वने काढी शुद्ध मोक्ष पंथे चडाबुं अने परम सुरवीया करुं," आवी भावना तेमने सदाय वर्ते छे ने तेम करवाने तेशी प्रवृत्त थाय छे. वळी ते ज्यां सुधी संसारमां रहे त्यां सुधी महा करूणाना समुद्र, के तज्ञ शिरोमणि, विनय प्रधान, अति औदार्य धेर्य गांभिर्य शौर्यवान, चारणागतवत्सळ, न्यायमार्गगामी, देवगुरुना भक्त, परम परोपकारी, मार्थनाभंगभारु अने जगज्जनवंद्य होय छे. तथा तीर्थंकर थवाना भवथी पहेलांना त्रीजा भवने पामे त्यारे ते भवमां अनागव प्रसिद्ध भीश स्थानकोना आराघननी तप अवस्य करे छे, तेथी तीर्थकर नाम गीत्र उपार्जन करी, स्वर्ग छोकमां महद्धिक देवता थाय छे. त्यांथी र्च्यवी ज्यारे मनुष्यलावामां राजकुळमां जननीनी कुक्षिमां चरम अवंतारे अवतरें छे त्यारे ते रात्रिए जननी चीद महा स्वम देखे छे।



पण पाछा इंद्रादिक आत्री अभिषेक अने दीक्षामहोत्सव करे छे, प्रभु दीक्षा अंगीकार करीने तप संयमवडे ज्ञानावरणादि चार घातिक-मींनो क्षय करी केवल ज्ञान दर्शन उपनावी नीतराग सर्वज्ञ थाय छे, ते वखते इंद्रादिक आवी समवसरण रचे छे, प्रभु रत्न सिंहासने बी-राजी त्रिभुवननी पर्पदामां यथार्थ वस्तुधर्ममय देशना आपे छे, ते देशना एक योजन पृथ्वीमां सर्व जीवोने स्वस्व भाषापणे परिणमे छे, असंख्य जीवोए सर्वकाळे पृछेला जुदा जुदा प्रश्नानो उत्तर प्रभुजी तेमना मनंतुं समाधान थाय तेवो एक बचने आपे छे. पछी धर्मदेशना देता सता महिमंडळमां विचरे छे, अष्ट महा पातिहार्य अने चेत्रिश अतिशयवडे अर्लकृत थाय छे, मार्गमां हक्षो नमे छे, पक्षीओ मदिस-णा दे छे, कांटा अधीमुख थइ जाय छे, छए ऋतु सर्वकाळे सुख आपे तेवी वर्ते छे, इत्यादि अनंत महिमावाळा तीर्थिकरो थाय छे; सामान्य केवळीओने आ कहेल मभाव होतो नथी. तेओ केवळज्ञान दर्शनवंता होय छे. आ प्रमाणे अरिहंत देव परमार्थे परम उपकारी होवाथी मुख्यताए ''देव'' कहेवाय छे. तेमनी जे कोइ अज्ञानी जीव आशातना अनादर अवज्ञादिक करे छे ते अनंतकाळ पर्यंत दुर्गतियां रझके छे, अने तेगनी भक्ति करनारा जीवो सर्व प्रकारनी सुख संपदा पामे छे.

मश्र. ४१-हे महाराज ! जेवी रीते अरिहंती अहीं महा मभाव-वाळा होवाथी अने अनंत महिमावाळा होवाथी सर्व केवळीओ करतां श्रेष्ठ छे तेम मोक्षमां पण सर्व सिद्धो करतां तेमनी सिद्धता श्रेष्टतावाळी होय छे के नंहीं ?



ग्रुरु शब्दनो अर्थ शास्त्रमां एम कर्यों छे के-' धर्म-वस्तुतत्वना जाण, धर्मनाज करनार, धर्ममां सदा रहेनार अने धर्मनाज उपदेशक जे होय तेने ग्रुरु कहीए. ' ए कहेला गुरुना लक्षण गृहस्थमां होय नहीं तेथी तेनामां गुरुभावनी योग्यता नथी एम अमे कहुं छे.

पक्ष. ४४-रजोहरणादि मुनिना चिन्ह धारण न करवाथी गृह-स्थमां गुरुपणुं नथी के कोइ ज्ञानादिकना अभावना कारणथी नथी ?

उत्तर-हे भद्र ! वेपनो अभाव तो सर्व मनुष्यो देखी शके छे तेमां विशेष नथी, पण धर्म-बस्तुतत्वना जाण ए प्रथम कहेटुं गुरुनुं छक्षण तेनामां होतुं नथी तेथी तेनामां गुरुपणुं नथी.

प्रश्न. ४५-गृहस्थो पण महापंडित होय छ तो तेओ धर्म-तत्वना जाण केम न होय ? तेमनामां ए लक्षणनो अभाव घटी शकतो नथी.

उत्तर—हे भद्र ! पुत्रोने जणवानी पीडाथी पीडाती अने रुदन क-रती अनेक स्त्रीओनी पासे वेसवाथी जो बंध्या स्त्रीने तेनी पीडानो अनुभव थाय तो काव्य, व्याकरण, न्याय, तर्क, छंद, अलंकार, कर्म-प्रंय पर्यंत मकरणो विगेरे घणा शास्त्रोना जाण अने घणा आगमोना सांभळनार गृहस्य महा पंडितने आगमना अभ्यासी निरारंभी मुनिनी नेवो धर्म यम्तुनो अनुभव जागे. परंतु तेम थतुं नथी तेथी गृहस्य महा पंडितोने पण निरारंभी मुनिनी जेवो धर्म वस्तुनो अनुभव जागवी अमंभवित छे. तेथी अमे ने छक्षणनो अभाव कल्लो छे.

मक्ष. ४६-हे महाराज ! यहस्थने मुनिनी जेवो धर्मना स्वरूपनी भाम नहीं जागवानुं कारण शुं ?

जा हेनुओ छे ते आ प्रमाणे-जेम साबु, मात्र धर्मकार्यनाज करनारा होय छे तेम गृहस्य मात्र घर्मकार्यनाज करनारा होता नथी; तेओ छकायना आरंभ, विषय भोग, पुत्र पुत्रादिकना तिवाह विगेरे सांसा-रिक कार्यना पण करनारा होय छे, तथी सदा धर्मकर्चा एवं गुरुनं वीं जिसम क्युं छे तेनो पण तेनामां अभाव छे. वळी साधु, मात्र धमोंपदेशना करनारा छे तेम गृहस्थ, मात्र धर्मापदेशना करनारा नथी; निओं तो सांसारिक उपदेश पण करे छे. जेमके तारे पुत्र नथी मोटे र्वार्टी की परण, तारी पुनी मोटी थड़ हो तेना लग्न कर, दाणानी, घीनी, तेलनी अथवा कपास विगरेनी बनार तेन भवानी छे तेथी नेनी रागीरी कर उत्पादि अनेक आरंभना पण केंद्रनारा होय छे तेथी परिचेदार राप गुरना चीना लक्षणनी पण तेनामां अभाग छै. तथा रेंग्य राज संबिद्धिया अर्थ यापास्यांच रहे देव तेम सहस्थ साविदितस र्च १०५० की सानार्धित ने यो स्थानित वेपप्रादि पर्यकारीमां के 💤 🤔 ३६६ : स्था । बोजन कामबिळास व्यापार रोजगामादि पाप-र्के १५ए पर्रो ३ तता परेषां स्थितिरूप गुरुना चौथा *ख*राणनी ું 🗥 🦠 🗆 😥 છે. જેટેક 'પૂર્વતો પ્રતિવર્તાનો ન, નર્માવદેશ પ્રદેશ્યો ें हैं है। लेका ने बचार से साथी कुसन गृह भई ने शके. १८ ४ - १८४४ । सह १४० वर्ष आहारादिक में बेर्ग है र १ क. दि है। अप, पत्र किल्वीन आजा के देखाँ है र १ के कि के कि कि कि कि के कि अपने की स्थाप और स्थाप િલ્લા ૧૯૯૯ (૧૯૬૦) મેં દેશી હતા તાપણ મુખ્યમાં પશ્ચિમ કો મહી



पिंडिसेवीने मूळ गुण ने उत्तर गुण वंनेमां घणा अतिचार होय; एक-वीश संवळ दोपथी तेनुं चारित्र चित्र कावहं होय पण अनाचार वंने-ने न होय. शरीरनी शोभा विभूषा मुनिषणामां थइ शके तेवी इस्त-पाद मुख प्रक्षालनादि रूप करे, वाह्य व्यवहारथी पार्थस्थादिक जेवा देखाय पण पार्थस्थादिक व्रतमां निरपेक्ष निध्वंस परिणामी होय न आ व्रतमां सापेक्ष मृदु परिणामी होय. तेथी आ काळे पण साधु छे अने तेमना कृत्य तेमना नियंटानी हदमां होवाथी धर्ममय छे.

मक्ष. ५१-हे महाराज ! आये-' उपरथी पासथ्या जेवा देखाता छतां ते व्रतमां सापेक्ष होय ' एम कहुं ते शी रीते समजहुं ?

उत्तर-ए साधु संज्वळना क्रोध मान माया लोभना उदयथी तथा तेनाथी उत्पन्न थयेला रागद्वेपथी, तथा वेद अने हास्यरितना उदयथी अनाचार स्नान शोभा शृंगार काम भोगादि करवा इच्छे, ते करवा पवर्त्ते, विकारी थाय, पण बुक्कस अथवा कुशीलपिडसेवी नियंदाना सद्भाव रूप गुणथी व्रतोनी, दीक्षानी, शावननी अने वी-जा साधुओथी लजावानी अपेक्षा आववाथी अनाचारादि करता अटके, पाछा निवर्त्ते, मनमां विचारे के-" अरे जीव! तें पंचमहाव्रत उचयो छे, दीक्षा लीधी छे मांदे अकार्य न कर, जो तुं अकार्य करशे के दीक्षा पडी मुक्ये तो जिनशासनना विरोधीओ शासननी हीलना निदादिक करशे नेमज साधुओं तने गंडळी बहार गणशे, गुरु वेप उनारी लेशे. "आम विचारीने अकार्य करे नहीं, तेथी तेने व्यतसा-पेक्ष करीण, कदापि कोइ महामोहना उदयथी अकार्य करी नार्त्वे तो



छतां गुरुभावे वांदी नहीं. तेपज चारुदत्ते वकराने अंत समये शुद्ध धर्म पमाडचो, तेथी ते नंदीशर नामे देव थयो, ते देवे आवी चारुदत्तने धर्मीचार्य जाणी गुरुभावे वांद्या पण पासे वेठेला विद्याधर मुनिना पुत्रोए तेने गुरुभावे न वांद्या. आ प्रकारे होवाथी जिनवाणीना स्था-द्वादपणामां वांधो आवतो नथी.

पश्चः ५४—हे महाराज! गुरुनी सेवा भक्ति करवाथी तो गुरु प्रसन्न थाय छे अने तेथी सेवा करनारा तेमना सदुपदेश अवणनो तेमन नाना शास्त्रना अभ्यासनो लाभ पामे छे. एटले गुरु सेवातुं फळ तो सेवक्रने प्रत्यक्ष देखाय छे तेथी ते तो करवा गुक्त छे; परंतु देवो तो वीतराग सिद्ध निरंजन छे, ते सेवा भक्ति करवाथी सेवक उपर प्रसन्न थता नथी, तेम न करवाथी अपसन्न थता नथी, त्यारे तेमनी सेवा भिक्त करवाथी ने न करवाथी सेवक जनोने कांइ लाभ हानि देखाती नथी माटे अरिहंत सिद्ध मारा देव छे एम मानवुं तो जरुरतुं छे कारण के तेथी सम्यक्दिएपणुं निर्मळ थाय छे परंतु तेमनी सेवा भिक्त विशेषे करवानी तो जरुर जणाती नथी। तेओ तेन इच्छता पण नथी तो ते शा माटे करवी जोइए ?

उत्तर-हे भन्य ! गुरु सेवानुं दृष्टांत आपीने तमे कहुं के-'देव वीतराग होवाथी ते सेवा भक्ति करवाथी मसन्न थता नथी अने न करवाथी अमसन्न थता नथी ' ते तो वरावर छे पण ' सेवा भक्ति करवाथी ने न करवाथी सेवक जनोने कांइ लाभ हानि देखाती नथी ' ए कहेवुं असत्य छे. करवाथी लाभ छे, ने न करवाथी हानि छे. ते-



या लायक, मानवा लायक, नमवा लायक अने ध्याववा लायक छे, अने तेमनो संबे उपदेश आत्महिनेच्छ जीवोए। आदस्या लायक छे. ए सर्वज्ञ परमात्माए सर्व जीवोने हितकारी उपदेशन करेली छे तेथी ए मधु सर्वने परम उपकारी छै। " आवी वृद्धि तेवा देवने आश्रया-विना निराहंबीने उपजी नथी. पूज्यने निषे पूज्यनुद्धि पूज्यना आर्टंबनर्थान उत्पन्न थाय छे. अने एवी धर्मविचारणावाळी बुद्धिज धर्मतुं मूळ छे. वळी तेवी नुद्धि बीतराग देवना अवलंबनथी उपनेळी **द्दावाने लीघे ते बुद्धिना मूळ कारण देव** होवाथी देवभक्तिज सर्वे र्धमें तुं मूळ छे एम अमे क्युं छे. वळी देवना अवलंबनथी एवी धर्म-युद्धि पापीने भव्य जीवने ते धर्मग्राद्धिनी पेरणाथी देवउपर पारमा-र्थिक भक्तिराग मगटे, अने तेवा भक्तिरागधी ते देवना गुणोनी स्तवना करवामां, तेमनी पूजा फरवामां, तेमने नमनामां, तेमना स्म-रणमां, तेमना नामना जाप करवामां, तेमनं ध्यान धरवामां उद्यमवंत थायः तेमज देवमंदिर कराववामां, जिनविंव भराववामां, तेमना प्रति-ष्टा महोत्सव करवामां, तेमनी पुष्पहार केशरचंदनादिवडे विशेष भक्ति करवामां अने विविध अलंकारादिवडे तेमने शृंगारवामां पोताना द्रव्य-नी सफळता समजे. वळी गुरुमुखे विधिपूर्वक जिनागम भणवामां अने श्रवण करवामां पोतानी जींदगीनी सफळता माने, तेमज शक्ति प्रमाणे देशविरति के सर्वेविरिंग धर्म आदरवामां, विधिशुद्ध तप संयम पाळवामां उद्यमवंत थायः आ वर्धुं पारकी पेरणाविना देवभक्तिना पेम रसथी भरेली धर्मद्राद्धिना उ**द्धांसतपणायी धाय**• एवो जिनभक्तिनो



भी भनाचरित्रणांदी उद्धित

लक्ष्मी सरस्वति संवाद.

एकदा लक्ष्मी अने सरस्तती नच्चे निराद थयो, तेमां सरस्तती घोली के "जगत्मां हुं ज मोटी छुं, कारणके में अंगीकार करेला मतुष्यो सर्वत्र सन्मान पामे छे, अने तेओ सर्व पुरुपार्थना उपायोने पण जाणे छे, कर्णुं छे के—"स्वदेश पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते "राजा पोताना देशमां ज पृजाय छे, पण विद्वान तो सर्वत्र पूज्यते "राजा पोताना देशमां ज पृजाय छे, पण विद्वान तो सर्वत्र पूजाय छे, वळी हे लक्ष्मी ! हुं के जे नाणारूपे रहेली छे, तेना मस्तक-पर पण हुं रहेली होंडं, तो ज लेवा देवा विगेरे ज्यापारमां तारो ज्यवहार थइ शके छे, अन्यथा तने कोइ ग्रहण करे नहीं. माटे हुं ज मोटी छुं. "ते सांभळीने लक्ष्मी घोली के—"हे सरस्वती ! तें जे आ कर्णुं, ते तो मात्र करेवारूपे ज छे, ताराथी कोइनी सिद्धि थती नथी। कारणके तें अंगीकार करेला पुरुपो मारे माटे थईने सेंकडो अने हजारो देशीमां परिश्लमण करे छे, अने मारा अंगीकृत पुरुपो पासे आवी सेवकनी जेम तेमनी आगळ एमा रहे छे. कर्णुं छे के—

वयोराद्धास्तपेष्ट्द्धा, ये च श्रुद्धा बहुश्रुताः। ते सर्वे धनवृद्धानां, दारे तिष्ठन्ति किंकराः॥श।



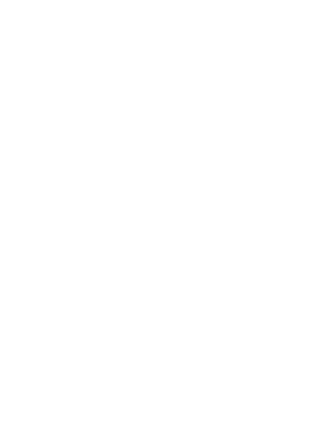
नेकी है सरम्बर्ध ! सुब चंगीसा दाजा कृती माग अंगी-कत कोटा प्राप्तित मेरा मनात है, गाम नेगीका करेता प्राप्ता रीते पर गुरुष न भाष है। मोरे नमतुमां है न मोरी हुँ। नहीं रे संस्थाती ! मात्र लैनमृतिभो शिवाय यीचा वे प्रयो तार्ग मैदन करे हैं, ने भे सर्वे पांचे मारे मांटे च केमके '' जासनी, प्रयास क्री विदान थाने हुं लक्ष्मीतुं उपार्धन करीज " एज नेपन् साध्य होयछे. नेपो पण भा जगामी माथे बालको ज तने अनुसारे छे, तेओ पण चन्साह रहित मात्र मातपिताना के अन्यापकना भयथा ज तारुँ सेवन करे हे, परंतु भीतिपूर्वक तने अनुसरता नथी. बीना केटलाक रुख पुरुपो तने अनुसरे छे, तेओ पण छज्जाथी के उदरभरणना भयथी ष्यया मारा अंगीहन पुरुषाने प्रसन्न करवाना हेनुथी ग्रप्त रीते अभ्यास तरे छे, केमके लोको पण तेमनी हांसी करे छे के-" अहो ! आटली मोटी उंमरे हवे भणवा बेठा छे, हवे पाके घडे कांठा चडवाना छे ? " इत्यादि कहीने छोको तेनुं उपहास करे छे. अने मारे माटे तो सर्वे संसारी जीवो अनादि काळथी सर्व अवस्थामां मने अतुकूळ ज छे. नानां वाळको पण मारुं नाणादिक स्त्ररूप जोइने तरत ज जल्लास पापे छे, इसे छे, अने मने ग्रहण करवा माटे हाथ लांवो करे छे, तो पछी जेओ अधिक अधिक उम्मरना होय छे, तेओ मने जोइने उल्लास पासे तेमां शुं आश्वर्य ! रुद्ध लोको पण मने उपार्जन करवा माटे यत्न करे तेमा कोइ पण तेनुं हास्य करता नथी, पण उलटी तेनी प्रशंसा करे छे के-" अहा ! आ पुरुप दृद्ध थया छतां पण स्वडपार्जित धनथी ज



आठ पगटां तेनी सन्तरम आभी तेने सालांग प्रणाग क्यी, अने नेने बहुमानपूर्वक बीना भद्रा नगर नेगारी पीते पेताना भद्रायनपर वेटो. वेना गुणथी रंगित थपेला धनिके नेने पार्य के-" हे भट्नी! आप कया देशना रहीश हो । अहीं जापनुं पायनं जा कारणे। थयुं छे ? कया पुण्यशालीने पेर भाषनी उनारो हो ? अने आपर्य नाम अं छे ? " आ प्रसाणे ते घनिकना पूछतायी ते बाळण वील्पी के-" हे गी ब्राम्मण प्रतिपाळक बेठ ! हं काशीदेवमां वाराणसी नामनी प्रतिव महा-पूरीमां रहुं छुं-हुं ब्राह्मणना पदक्षेमां तत्पर छुं,रामग्रवासी भणेली छुं,धर्म-नी रुचिवाळाने पुराणादिकनी नथा श्रवण कराववा वढे मारी दृति (आ-जीविका) छे, अनेक ब्राह्मणोने हुं वेदादिक शास्त्रोतुं अध्ययन कराबुं छुं, ते नगरीनो राजा पण भक्तिपूर्वक मारी सेवा करे छेर ते राजाए मने गृहस्थाश्रमना निर्वाह माटे सो गाम आपेळां छे, तेथी हुं सुखे वसं छं. हे शेट! एकदा शास्त्र वांचतां तेमां यात्रानी अधिकार आव्यो तेमां में वांच्युं के-' मनुष्य जन्म पामीने जेणे यात्रा करी नथी, तेनो जन्म अंतर्गेडुना जेवो निष्फळ छे. ' आ प्रमाणे यात्रातुं माहातम्य जाणीने मने तीथीटन करवानी इच्छा थड्; तेथी हुं घर आगळ पालखी, मीयाना, विगेरे वाहनानी सामग्री छतां पण तीर्थयात्रा पंगे चालीने करवाथी मोटा फळने देनारी थाय छे तेथी ते सर्व छो-डीने एकलो ज तीर्थयात्रा माटे नीकळ्यो छुं. अने फरतां फरतां गइ काले ज अहीं आन्या छुं. एक शाह्माभ्यासनी शाळामां मारो उतारी छे. त्यां रात्रीतुं निर्गमन करी पातःकाळे स्नानादिक पट्कर्म करी



नेप संगीतथी संवाइने दोदना दोदना लां आपना लाग्या, अने तेओ पण चित्रनी जेम निश्क शहेन एक निचे श्राण करता छागा। तेमन जेओ शासना ज्ञानमां कुशक पंडितो हता, जेओ पोतपोतानी विद्वाना गर्ववाळा हता, जेओ अत्यंत सस्त अभ्यामयी समग्र गा-सना परमार्थने कॅंट राखनारा हता. तथा जेओ वातृत्व अने कतित्वः ना शास्त्र भणीने तेनुं फळ पामवाशी मदोन्मत्त थउने फरता हता, तेओ पण त्यां आवीने श्रवण करवा लाग्याः ते गायावी बाह्मणनी नवनवा उल्लेखयी शोभती तुद्धिनी पट्टनाथी शब्दभेद, पदच्छेद अने श्रंपार्थ विगेरे विचित्र मकारना अहंकारथी गर्भित अने सर्वतोमुख (विषय) वाळी वाणीनी क्रशळता जोइने ते सर्वे पंडितो पेातपेातानी निपुणतानो गर्व तजी दइ ते ब्राध्मणनी अने तेनी वाणीनी प्रशंसा करवा छाग्या-" अहो ! हां आ ते ब्राह्मण छे ? के रुपांतरे आवेली ब्रह्मानी मूर्ति छे ? आ ते साक्षात् कामदेवनी मूर्त्ति छे के दाही मूछ-वाळी साक्षात् सरस्वती देवी छे ? अथवा ह्युं आ सर्व रसोनी पत्यक्ष मृत्ति छे ? आनी वाणी शुं आदिब्रह्मनी ध्वनि छे ? के शृंगारादिक अमृत रसनी नदी छे ? अहो ! आतुं चमत्कार उपजाववामां कुशळपणुं अने बुद्धिनुं पडुपणुं ? अहो ! आनी सार्थक अने विविध प्रकारना अ-र्भेनी योजना करवानी शक्ति ? अहो ! आनी शब्दना अनुपासनी चतुराइ ? अहो ! आनी एकज पद्य (कविता) मां दरेक पादे नवा-नवा राग उतारवानी शक्ति ? अहो ! आनी अत्यंत कठण अने गंभीर अर्थने श्रोताना हृदयमां सहेलाइए उतारवानी (समजाववानी)



णीनां टीपां पडतां हतां, मुखमां एक पण दांत हतो नहीं, अने तेथी तेमांथी छाळ पहती हती, दृद्धावस्थाने छीधे मस्तकपरना केश खरी पडवाथी टाळ पडेळी हती, शरीरनी चामडीपर जरा पण तेज हतुं नहीं, वचन वोलतां पण स्खलना थती हती, नेत्रथी वरावर जोइ शकातुं नहोतुं, मिलन श्वेत वस्त्र धारण करेलुं हतुं, शरीरनो भाग कटीपदे-शयी नीचे नमी गयेलो हतो, तथी हाथमां लाकडीनो टेको राख्यो हतो, चाळतां पग थरथरता हता, तेथी ते लथडीया खाती खाती मुक्केलीथी चालती हती. आवा पकारतुं स्वक्प धारण करीने ते नग-रमां आवी. नगरमां भमती भमती तेज शेठना महेलना पाछला द्वार पासे आवीने दीन वाणीवडे जळनी याचना करवा ळागी. ते द्वार अर्धु उघाडुं हतुं, त्यां ते शेठनी पत्नी तथा तेनी पुत्रवधु वेठी वेटी पेला ब्राह्मणनी मधुर वाणी रसिकताथी सांभळती हती. तेणीना कर्णमां आ रुद्धातुं वचन उकाळेला सीसा जेवुं लाग्बुं, अने अवणमां रसनो भंग थवा लाग्यो, तेथी साम्रुए क्रोधथी बहुने कहाँ के—" हे बत्से ! जो, जो, पाछळने द्वारे कोण पोकार कर छे ? कोइक कटोर शन्द वोलेछे, तेथी आ मछुर वाणी सांभळवामां विन्न थाय छे, माटे ते जे कांड़ मागे ते आपीने तेने अहींथी काढी मुक, के जेथी छुखे सांभळी शकायः आर्त्रं सुंदर श्रवण करवानुं आज कोइ महापुण्यना उदयथी माप्त थयुं छे. फरीथी आवं मळशे नहीं. आ क्षण छन्न महोरोयी पण वधारे मोंबो छे, एक घडी पण जन्म अने आसा जीवतरने सफळ करनारी छे, माटे जलदी जड़ने तेने रजा आपी पाछी आव.



दासी केम थाओं हो ? तमार्क कोड सर्गु नहार्ट्ड नथी ? " डोशी चोली के-" हे कुलवनी! मारे पढेलां तो घणा कुटुंबीओ हता, ते मर्वे गरी गया है. शुं करवुं ? कर्पनी गाँव अनिर्वाच्य हे ! कोण जाणे छे के शुं थयुं अने शुं थशे ? हमणां तो हुं एकठी ज छुं, आ-यां पात्रो तो मारे घणां हो, पण मारी चाकरी करे तेवं कोड नथी। जे कोड मारी सेत्रा करे, अने मारी जींदगी पर्यंत मारी अनुकुळताए वर्ते, तेने हुं मार्न सर्वस्व आपी दुई, मारे राग्वीने शुं कर्द्ध छे ? लक्ष्मी कोइनी साथे गइ नथी, जनी नथी अने जशे पण नहीं. " एम करीने डोशीए झोळी उचाडीने ते बहुने बताबी, बहु झोळीनी अंदर जीवा लागी, तो तेवां अनेक रत्नवय पात्री, अनेक रत्नना आभूपणी तथा अनेक मोतीना अलंकारो जोया. ते दरेक करोड करोडना मृत्य-बाळां हतां, अने पृथ्वीने विषे अलभ्य हतां, तेणीए कीड् पग बखन नजरे पण जोयां नहें।तां तेवां ते हतां, तथा तेमां स्त्री अने पुरुपने पहेरवा योग्य उंचां किंमती वस्त्रो अने वीजा पदार्थी पण इतां. ते वहु तो आ सर्व वस्र आभरण विगेरे जोइनेज कथा सांभळवातुं तो भूछी ज गइ, अने तेणीना चित्तमां लोभ पेठो. लोभधी रांत्रित थपेली ते वह बोली के-" हे डोशी मा! शा माटे तमे दुःखी थाओ छो? तमारी सेवा हूं करीश, तमे तो मारी माता समान छो, अने हुं तमा-री पुत्री छूं, हुं मन, बचन कायाथी तमारी जीवन पर्यंत शुद्ध सेवा करीशः तेमां तमारे कांइ पण शंका राखत्री नहीं, अने कांइ पण भेद (जुदार) राखवो नहीं. घरमां आवो, अने आ भद्रासनपर सुखेर्या



श्रवणमां विद्र करे छे ? विधाताए तने मनुष्यने रूपे परा सरजी दे-खाय छे. आवा दुर्रुभ मनुष्य भवने सफल करतां अपने तुं वृप पाडीने विब्र करे छे, तेथी तेना पापवडे तुं मरीने गरेडी थइग." त्यारे बहु चोली के—" हे पूज्य ! एक द्रद्ध माता तमारा अगण्य पुण्यसमूहना **उदयव**डे ओचिता अने अणवोलाच्या लक्ष्मीनी जैम आच्या छै."ते सां-भळीने ते सास्रए क्रोध अने अहंकार सहित जवार आप्यो के-" हे जडयुद्धियाळी ! आ गाममां आपणाथी कोइ मोट्टं छे ? के जेने तुं सरसवने मेरुनी उपमा आपी वर्णवे छे ? माटे में तने जाणी के तुं महाँ मूर्ख छे. तुं आवडी मोटी उम्मरनी थइ छे, तो पण वखत वे वखनने हजु जाणती नथी. कदाच कोइ मोर्ड माणस अयोग्य अव सरे आपणे घर आब्धं होय, तो तेने योग्य सन्मान अने शिष्टाचार करीने विदाय करी पोताना कार्यमां साववान थाय तेज डाह्या कहेवाय, पण तारा जेवा डाह्या कहेवाय नहीं. " आ प्रमाणे सासुने वचन सांभळीने वह बोली के-"आपे कहां ते वरावर छै, परंतु एक-वार अहीं आवीने मार्र एक वचन सांभळीने पछी खुशीथी जाओ. शामाटे नकामा लोकोने संभळावो छो ?" ते सांभळीने सासु अक्टी चडावीने नेत्रने वांका करती आवी, अने बोली-' छे, आ आवी, शुं कहे छे ? ' त्यारे ते बहुए पोतानी कक्षामां लूगडानी अंदर राखेळुं रत्न जडीत सुवर्णतुं पात्र देखाडचुं. ते जोतांज सू-र्यनो उदय थतां कमळनी जेम साम्रुनुं मुख विकस्वर थयुं• हास्य अने विस्पयसाहित तेणीए वहुने पूछ्युं के-'हे पुत्री !



ज गणत्री. अमारा मोटा भाग्यनो उदय थयो के जेथी तमे तीर्थस्वरूप अमारे घेर पत्रायी. आ मारी चारे वहुओ तमारी दासी प्रमाणे छे, ते तमारी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे. खान, पान, स्नान, शय्या पाथरवी, **ज्पाडवी विगेरे जे कामकाज होय ते तमारे निःशंकरीते अमने** कहेवं, ते सर्व काम अमो सर्वे हर्पभेर शिरसाटे करशुं. " ते सांभ-ळीने रुद्धा बोली के-" हे भद्रे ! तुं कहे छे ते घणुं ठीक छे, परंतु तारो पति आवीने बहुमानपूर्वक आदरथी मने राखे, तो हुं स्थिर चित्ते रहुं, केमके चित्तनी प्रसन्नता विना कोइने घेर रहेवुंठीक नहीं." ते सांभळीने शेठाणी वोछी के—'' एटटाथीज जो तमारा मननी प्रसन्नता थती होय, तो ते अति सुखे थइ शके तेवं छे मारा स्वामी आवा कार्यमां अत्यंत हर्पवान् अने उत्साहवान् छे, अने पोते अंगी-कार करेळानो पसन्न चित्ते निर्वाह करे छे. " त्यारे ते छद्रा बोळी-"जो एम हेाय तो पण तेनी अनुज्ञा विना माराथी अहीं रही शकाशे नहीं. " शेठाणीए कहां-''त्यारे हमणांज तेमने वालावीने अनुज्ञा अपावं.'' यद्धाए पूछयुं-'ते क्यां गया छे ²⁷ शेटाणीए जवाव आप्यां-'' कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे, तेनी पासे धर्मनुं श्रवण करे छे, पण तेने इपणां ज घोलाबुं छुं. " रुद्धाए कहुं-" जो एम होय, तो तेने धर्मश्रवणमां अंतराय न करवो. " शेटाणी वोली-" अरे ! एवा तो पोताना उदर-निर्वाहने माटे घणाए आवे, तथी शुं घरतुं कार्य वगडवा देवं ? " एम कहीने ते भेठाणी दे।हती दोहती जे भागनी अंदर रहीने बहुओ सांभळती इती त्यां जइने तेना चारण।मां उभी रही पाताना एक से॰



चृद्ध माता आवी छे." शेठे कहुं-' कोण ! तारी मा आवी छे ?' एम चोलतां बोलतां शेठ घरमां गया. एटले शेटाणीए पेट्टं पात्र देखाड्यं. ते जोतांज चकपकना पापाणपर छोढानुं आकर्पण थाय तेम आकर्पण थवाथी पूर्वेतुं सर्वे अध्यवसित शेठ भूली गया, अने वोल्या के—' कोइ पण वखत नहीं जोयेदुं आ पात्र क्यांथी ?' ते वोली—''हे स्वामी ! हमणां आपणे व्याख्यान सांभळता इता, त्यारे एक कोइ परदेशी डोशी आवी, तेणे आपणा आंगणामां उभा रहीने पाणी मार्युं, त्यारे में मोटी बहुने आज्ञा करी के-जा, जो, कोण आबुं कटक वचन वेलीने धर्मश्रव-णमां अंतराय करे छे ? तेने जे जोइए ते आपीने तेने रजा दइ आव." इत्यादि सर्वे वृत्तांत स्वामीने निवेदन करीने तेणीए कहां के-" हे स्वामी ! तमारा भाग्यना वश्थी आ दृद्धा जंगम निधाननी जेम आ-विस्री छे. कोइ पण तेने ओळखतुं नथा, कोइ तेने जाणतुं नथी, प्रथ-मज तमारे घेर आबी छे. तेणीनी पासे आवां पात्रो, वस्त्रो अने आ-भूपणो घणां छे, माटे तेणीने वश करीने आपणे त्यां राखो. " ते वात सांभळीने लोभथी विहळ थयेको शेठ शेठाणीसहित ते दृदा पासे गयो. तेणीने प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के-" हे माता ! तमे कया देशथा पधारो छो ? तमे क्तराळ छो ? शुं तमारो कोइ परिचारक नथी ? " त्यारे ते दृद्धा वोळी के-" हे भार ! पहेलां तो मारे आई ज घर, धन अने स्वजन विगेरे एटछुं वहुं हुतुं के तेटछुं राजाने पण न होय, परंतु हमणां तो केवळ एकछी ज छुं. सर्व संसारी जीवोना कर्मनी गति विचित्र छे. कहां छे के-



बाह्मणने रूपे भारततुं व्याख्यान करे छे अने पूर्वे कहेला सर्व लोको श्रवण करे छे; ते ज रस्ते थइने केटलाक रामसेवको अने बीमा केटलाक नगरना गरीव भिक्षको विविध प्रकारना वस्तो तथा आभूर पणो हाथमां राखीने दोडता दोडता नीकळ्या. ते जोइने कथाना श्रत-णमां तल्लीन थयेला लोकोए तेमने पृछपुं के-'' आ सुवर्ण रुपाना अलंकारो अने वस्तो क्यांथी छाव्या ? तथा शीवगतिथी केप दोडचा जाओ छो ? " एटले तेओ बोल्पा के-" अमुक कोटचापि-पति शेटे राजानो कांइक मोटो अपराध कर्यो हशे, तथी अत्यंत कोप पामेला राजाए सभा समझ हकप कर्यों छे के-" सर्वे राजसेवको तथा नगरना लोको स्वेच्छाथी आ गुन्हेगारनुं घर छुंटी हपो, तेमांथी जे माणस जे जे वस्तु छड़ जर्ज ते ते वस्तु तेनी थर्ज, तेमां अमारा तरफथी कोइ पण प्रकारना भयनी शंका राखवी नहीं. " आवी हुकम थवाथी सर्वे लोको तेनुं घर छुंटवा लाग्या छे, लोकीए घर्षुं हुंट्युं तो पण हजु घणुं छे, तमे केम जता नधी? जाओ, जाओ, त्यां जइने ख़ुशी पडे ते चीज ग्रहण करो. कोइ पण अटकायत करतुं नथी. आवो अवसर फरी फरीने क्यांथी मळशे ? अहीं वेसीने वार्ता सां-भळवाथी शुं हाथमां आवशे ? " आ प्रमाणे तेओए उत्साहित कर्या एटले तेमां ने लोभीजनो इता ते सांभळवानुं छोडी एकदम दोडता त्यां गया. एटलामां केटलाक ब्राह्मणी केटलाक वस्न विगेरे लड्ने ते तरफ नीकळ्या; तेमने पंडितोए तथा वीजा ब्राह्मणोए पूछशुं के-' आ कोने घेरथी लाव्या ? ' एटले तेओए कहुं के-" राजाना अप्रुक



तेमने पहेरचा योग्य वस्त्रो छाउँछुँ, वेटलामां तमे तेमने स्नान करावी रयो. " पछी घेटाणीए नेपना कवा प्रमाणे तेळतुं पर्दन करीने ने ढोशीने स्नान करावी सृंदर वसवडे शरीर छुछुतुं. शेठे पण सृंदर नस्रो रुपिने तेणीने पहेराव्यां, अने तेणीने सुखासनपर बेसाडी पछी डोमीए क्षुं के-' तमारा घरना आंगणावां कोण माटा शब्दथी बोले छे ? ' शेठे जवाव आप्यो के-" माजी ! कोइक परंदशी ब्राह्मण आ-च्यों छे, ते मोटे स्वरे अनेक मुंदर सुक्तो बोले छे, तेनी पासे घणा छोको अवण करे छे. " त्यारे दृद्धा बोली के-" अहो मारान कर्मनो दोप छे. ते लोकोने धन्य छे के जेओ रासिक थड़ने हर्पपूर्वक तेर्ड श्रवण करी आनंद पामे छे. वाकी मारा कानमां तो ते तपायेन्टा सी-सानो रस नांखवा जेवुं छागे छे. " त्यारे शेंठे कहां, के- माजी ! इमणांज तेने वोलतो वंध करुं छुं. " छुद्धा वोली–'शा माटे अंतराय करवो जोइए ? ' क्षेटे कर्युं-" तमारा दुःखतुं कारण निवारण करवा-मां अपने कांइ पण हरकत नयी, माटे तेने आ स्थानेथी उठाडुं छुं. ते ब्राह्मण वीजे टेकाणे जड्ने यांचेशे. अहीं कांड् तेनी लागी नथी. " एम कहीने शेठ दोडतो त्यां गया, अने क्रोधयी बोल्यो के-' हे भट्ट! ह्वे अहींयी उठा. आ श्रो अहीं कोलाहल मांडचो छे ? ' ते सांभळीने जे थोडाएक स्रोको वेटा इता, तेओ वोल्या के-" अरे आ उत्तम ब्राह्मण तमार्रु कांइ छइ जाय छे ? शुं तमारी पासे कांइ पण मागे छे ? आ तो तमारा भाग्यना योगे साक्षात् ब्रह्मान ब्राह्मणने स्वरूपे व्याच्या छे. माटे हे शेठ ! तमे डाह्या, निपुण अने शास्त्रज्ञ थहने आर्द्ध



पण नथी. वळी मारी तो आज्ञाज प्रमाण छे, तेमां कांइ युक्ति कर-वानी नथी. " एम कहीने ते जळपात्र छड्ने घरमांथी नीकळी ज्यां सरस्वती वठी हती त्यां गइ.

लक्ष्मीए सरस्वतीने पूछ्युं के- "हे सरस्वती ! हां समा-चार छे ? आ जगत्मां कोण मोइं ? रे बहेन ! लोकमा तें एवी रुढी पवर्ताची छे के छक्ष्मीना मस्तकपर मार्र स्थान छे, ते वात खरी; परंतु एतो राजाए पोतानी आज्ञा प्रवर्ताववा माटे एवी रीत करी छे. जो कदाच सुवर्ण के रुपुं अक्षरोनी मुद्रा विनातुं वेचातुंज न होय, तो तो तारुं महत्व खरुं, वाकी ते शिवाय तो ते मात्र फूल (वडाइ) मारवा जेवुंज छे. " ते सांभळीने सरस्त्रती वोली के-'' अज्ञानवडे अंघ थयेला आ जगत्मां तुंज मुख्य छे, केमके मात्र मुनिजनो विना बीजा सर्वे संसारी जीवो इंद्रिय सुखमां आसक्त छे, तेथी ते सर्वे तारीज अभिलापा करे छे. अने जे कोइ जिनेश्वरना वचनतुं रहस्य जाणनारा छे, तेओज मात्र मारी इच्छा करे छे. " छक्षी बोली-'हे सरस्वती! जे कोइ तारी इच्छा करनारा छे, तेओने तो तुं पण पाय अनुकूळ थाय छे, तेनी साथे तुं विचरे छे. तेनी थोटी के यणो प्रयास तुं सफळ करे छे, तेमनुं सांनिध्य तुं मूकती नथी, अने तेमने तुं सर्वथा निराश पण करती नथी; परंतु जे कोइ शाखनी अभ्यास करतां खेद पामीने ताराथी विमुख थाय छै, तेओ तारे। त्याग करे छे, तारुं नाम पण ग्रहण करता नथी. वळी जेओ तारापर अन्यंत आसक्त छे, तेओ पण मने तो इच्छेछेन. शास्ननी अस्यास पण मने मेळव्या माटे करे छे. निर्मुण पुरुषोमां अनेकमकारे

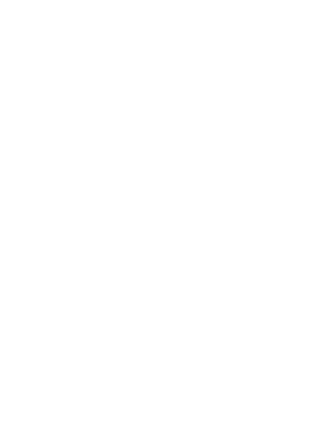


वयोष्टजास्तपोष्टजा ये च छजा नहुश्रुताः । ते सर्वे धनवुजानां द्वारे तिष्ठन्ति किंकराः ॥१॥

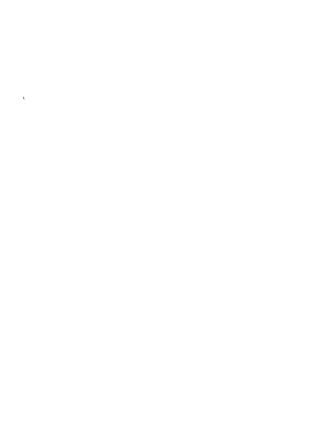
अर्थ—जेओ नगभी इद्ध छ, तपस्याथी इद्ध छ अने जेओ नहु-श्रुत होताथी इद्ध छ, ते सर्वे धननडे इद्ध एवा पुरुषोना द्वारमां कि-करनी जेम रहे छे ?

हे सरस्वती ! घणुं शुं कहेवुं ? गरण आवतां सुधी पण पोताना धनने मगट करता नथी, अने मारी इच्छा पण मृकता नथीं, जो कर दाच तारा मानवामां न आवतुं होय, तो हुं तने मत्यक्ष वतावुं, के सर्व माणीओतुं जीवित दश माणोथीं वंश्रायेळुं छे, तेमां धनम्द्रपी अगीयारमो वाष्य माण पण उपचाग्थी कहेळो छे, ते वाष्य माणास्पी धनने माटे धइने केटलाएक पुरुपो अभ्यंतरना दशे माणोने छोडी दे छे, पण धनने तत्रता नथीं, मारुं स्वस्त्रप जे स्थाने रह्यं (बाटेळुं) होय, ते पर कदाच हक्ष जमे, तो ते पण जलदीथी हाद्धि पामीने पुष्प फलादिकथी मफुछित थाय छे, तथा ज्यां मारुं स्वस्त्रप होय, त्यां देवो पण वोलाव्या विना ज जाय छे. माटे हे सुभमा सरस्वती ! मारी साथे चाल, तने कीतुक वतावुं. "

आ प्रमाण कहीने ते वन्ने देवीओ चान्नी, अने नगरथी पांच कोश दूर जइ एक द्रक्षोना कुंजमां वेटी. पद्यी लक्ष्मीए देवी मायावडे एकसो ने आठ गज लांवी पहोळी अने त्रण हाथ उंची एवी एक स्ट-चर्ण शिला विक्कवीं. ते शिला रेतीमां डूबी गयेली अने मात्र एक हाथ



जाए कहां-'' ख़ुशीथी तुं जा, तारा वाप दादाए त्यां थापण मूकेळी छे, तेथी तेतुं पोटकुं वांधीने घेर आवजे. मारी शंका तारे जरा पण करवी नहीं, के एपांधी भाग देवो पडशे, मारे भाग जोइतो नधी, माटे तारे मने भाग आपवा नहीं, तुं ज छड़ने सुखी था. " एम क हीने वीजो शीघ्रताथी गाम तरफ चाल्यो अने पहेलो तो तेनायी जूदो पडीने ते शिला पासे गयो. त्यां तेणे रेतीमां दरायेली शिलानी एक खुणो जाल्य सुवर्णमय जीयो. ते जीइने मनमां आश्रर्य पामी वि-चार करवा लाग्यो-" अहो ! वहु सारुं थयुं के मारो सोवर्ता न आव्यो. जो कदाच आव्यो होत, तो तेने भाग आपनी पडत, मारा ज भाग्यनो उदय थयो छे. हवे हुं जोडं तो खरो, के आ मुवर्ण केट-छुंक छे ? " एम विचारीने ते रेतीने हाधवढे दूर करवा लाग्यो, अने जोयुं तो ते अपरिमित मोटी शिला जोइने अत्यंत हर्पने लीधे गांडा जेवो यइ जइ विचारवा लाग्यो-" अहो मार्र अद्भुत भाग्य छे, के जेयी मने आर्चु निधान प्राप्त थयुं. मारापर आजे देव तुष्टमान थयुं छे. आटला लामयी तो हुं राज्य करीश. आ धनना मभावधी हाथी, घोडा, पायदळ विगेरे सन्य तैयार करीशा पढ़ी बळवान थइने अप्रुक देश जीतीने त्यां राज्य करीश. " आ ममाणे मधना घडाने उपाडनार दोखसछी पुरुपनी जेम आर्नध्यानमां तछीन यहने ते फरीयी विचार करवा लाग्यो के-' कोइ पण उपायथी आ सुवर्णने हुं ग्रहण कर्त. ' आ ममाणे विचारतो ते न्यां ज उभी रह्यो अने तर्क वितर्फमां गर्क घेंडें गयो. बीजो सेवक के ने गाम तरफ चाल्यो गयो हतो, ते केटलेक



घोल्यो के-" तारो आगां कांइ पण लाग भाग नथी, आ सर्व पार्र छे, हुं ज प्रहण करीश. केमके में तो तने प्रथमधीज कहुं हतुं, के है भाइ! चालो, आपणे त्यां जड़ने जोड़ए के ते तेजस्वी वस्तु हुं छे? त्यारे तें जवाव आप्यो हतो के तुं ज जा, तारा पूर्वजीए थापण मूर्की इसे, तेनुं पोटकुं वांधीने घेर आवजे, मारे भाग जोइतो नथी, माटे मने आपीश नहीं. आ प्रमाणे कहीने तुं तो आगळ चालतो थयो हतो. अने हवे पाछो भाग मांग छे, तो ज्ञुं तारूं ज कहेलुं तुं भूळी गयो ? हुं तो साहस करीने अहीं आन्यो. मारा पुण्यना उदयथी मने आ पाप्त थयुं छे, तेथी आ पार्र ज छे. तार्र आपां शुं लागे ? जेमं आन्यो तेमज पाछो घर चाल्यो जा. आमांथी एक कोडीना मूल्य जेटछुं पण तने आपीश नहीं. फोगट शा माटे उभो छे ? अहींथी चारयो जा. नहीं तो मारे अने तारे मेत्री रहेशे नहीं. " आ ममाणेनां तेनां वच-नो सांभळीने छोभने वश पडेलो बीजो पण क्रोधथी बेल्यो के-"अरे मूर्खराज ! केम मारो भाग नहीं ? हुं अने तुं एक राजाना ज सेवको छीए. राजाए एकज कार्य माटे आपणने मोकल्या छे. तेमां लाभ के हानि, सुख के दुःख जे कांड् थाय, ते आपणे बन्नेने लेवातुं अने स-इन करवार्तुं छे. एक ज स्वामीए एकज कार्यने माटे फरमावेला से-वकोने जे कांइ लाभ थाय छे, ते सर्व वहेंचीने ज लेवाय छे, ए म-माणे राजनीति छे, ते ग्रुं तुं भूली गयो ? माटे हुं तो तारा माथापर हाथ मूकीने आमांथी अधों भाग लड्झा तुं कड़ निद्रामां उंचे छे ? शुं था जगत् मनुष्यरहित यइ गयुं छे के जेथी तारुं ज कहे छुं थशे ?



सार्रं. अपे तमारा सेवकीज छीये. आप ने आज्ञा करशी ते ममाणे अमे बरशुं, " त्यारे जाटेले तेमने ते शिला देखाडीने नहुं के-" में तपस्यानी शक्तिवंडे वनदेवतानुं आराधन कर्यु, त्यारे तेणे पसन थइने आ निधि वताच्यो छे. तेथी इवे आना ककडा करीने आनो तीर्थीमां ट्यय करवो छे, माटे तमे आना ककडा करो. " आ प्रमाणे ते जटि-**छनी वाणी सांभळीने तथा ते शिलाने जो**इने लोभसागरमां मग्न थयेला ते चोरेा परस्पर विचार करवा लाग्या के-" हे भाइ ! जटिल-नी दंभरचना जाणी के ? ते कहे छे के मने देवताए निधि देखाडचो. पण आ तो पूर्व कोइ राजाए सुवर्णना रसधा आ शिला वनावीन पृथ्वीमां निधिपणे स्थापन करी हशे, पछी घणो काळ जवाथी मेघ-ष्टि विगेरे यवायी उपरनी माटी घोवाइ गइ हवे अने पवनथी तेनो एक खूणो उघाडो ययो ह्ये, एवामां आ जिटल भमतो अहीं आवी चढचो, अने आ शिलानो खूणो जोइने कोभर्या तेने पोतानी मानीने रहों छे. आ आखी शिलाने तो ते लड़ शके तेम नथी, तेथी तेना क्कडा कराववा माटे आपणी पासे दंभरचना करीने आपणने टगवा माटे कहे छे के तमने दरेकने हजार हजार महोर आपीश, पण अर्थो त्रीजो, चोथो, पांचमो के सातमो भाग आपीश, एम तो कांइ कहेती ज नथी; सर्व हुं एकलोज लड़ जड़श एम कहे छे. शुं आ एना वापर्तु धन छे के जिथी आ प्रमाण आपणने छतरे छे ! माटे आने हणीने आपणेज सर्वे लड़ लड़ए. " ते सांभळी तेमांना एक जणे कर्युं के-'आ तपस्वी छे, एने केम मराय ?' त्यारे बीजो बोल्यो—" आतुं



सार्रं. अमे तमारा सेवकीन छीये. आप ने आज्ञा करशी ते ममाणे अमे करशुं. " त्यारे जाटिले तेमने ते शिका देखाडीने कहां के-" में तपस्यानी शक्तिवडे वनदेवतानुं आराधन कर्युं, त्यारे तेणे प्रसन्न थइने आ निधि वताच्यो छे. तेथी हवे आना ककडा करीने आनो तीर्थीर्ग ष्यय करवो छे, माटे तमे आना ककडा करो. " आ प्रमाणे ते जटि-छनी वाणी सांभळीने तथा ते शिलाने जोइने लोभसागरमां मग्न थयेला ते चोरे। परस्पर विचार करवा लाग्या के-" हे भाइ ! जटिल-नी दंभरचना जाणी के ? ते कहे छे के मने देवताए निधि देखाडची. पण आ तो पूर्व कोइ राजाए सुवर्णना रसधी आ शिला बनावीने पृथ्वीमां निधिपणे स्थापन करी हशे, पछी घणो काळ जवाथी मेव-ष्टिष्टि विगेरे थवाथी उपरनी माटी घोवाइ गइ हत्रे अने पवनथी तेनी एक खुणो उघाडो ययो ह्वे, एवामां आ जटिल भमतो अहीं आवी चढचो, अने आ शिलानो खुणो जोइने छोभर्या तेने पोतानी मानीने रह्यों छे. आ आखी शिलाने तो ते लड़ शके तेम नथी, तेथी तेना ककडा कराववा माटे आपणी पासे दंभरचना करीने आपणने टगवा माटे कहे छे के तमने दरेकने हजार हजार महोर आपीश पण अर्थी त्रीजो, चोथो, पांचमी के सातमो भाग आपीश, एम तो कांइ कहेती ज नथी; सर्व हुं एकलोज लड़ जड़श एम कहे छे. हुं आ एना वापतुं धन छे के जेथी .आ प्रमाणे आपणने छेतरे छे ! माटे आने हणीने आपणेज सर्वे छइ छइए. " ते सांभळी तेषांना एक जणे क्युं के-'आ तपस्वी छे, एने केम मराय ?' त्यारे बीजी बोल्यों-" आर्ड





नर अने सर्प पोतपाताने स्थाने गया त्यार पछी ब्राह्मण शंकामां पडयो सते। विचार करवा लाग्यो के $m{-}^{\prime}$ आ सोनीने कार्ढु के नहीं $?^{\, \prime}$ एवा संशयरुपी हिंडोलापर तेनुं मन हींचकवा लाग्युं. ते वखते कूवानी अंदर रहेलो सोनी बोल्यो के-'हे ब्राह्मण ! लोकोने उद्देग करनारा अने विवेकरांद्रेत एवा वाघ, वानर अने सर्पनो उद्धार तमे तरतज कर्या, अने मने काढतां विलंब केम करो छो ? हुं तो मनुष्य छुं, शुं सर्प, वानर अने वाघधी पण हुं वबारे दुष्ट छुं ? हुं हुं तमारा उप-कारने भूळी जड्श ? माटे मने काढो; जन्मपर्यंत हुं तमारो सेवक थ-इने रहीश. ' ते सांभळीने सरळ प्रकृतिवाळा ब्राह्मणे विचार्थुं के-' आ सोनी सत्य कहे छे. धुं आ मतुष्य तिर्यचथी पण इकको छे ? जे यवातुं होय ते थाओ. उपकारीए पंक्तिभेद राखवी ए योग्य नथी. वळी ते वाघ विगेरेतुं कहेर्बुं पण सत्य छे, परंतु मारे एनी साथे छुं काम छे ? हुं दूर देशमां रहुं छुं, अने आ तो आ देशनो ज रहीश छे, ते मने हुं करशे ? 'एम विचारीने ते ब्राह्मणे सोनीने पण वहार काढयो. त्यारे सोनीए बाह्मणने प्रणाम करीने कखुं के-' तमे मने जीवित दान आप्युं छे माटे मारापर कृपा करीने मारे घेर आवजो; हं अप्रक गाममां अप्रक शेरीमां रहुं छुं. हुं तमारी ययाशक्ति भक्ति करीश. ' ए प्रमाणे वाणीनो विलास करीने ते गयो. पछी पेलो ब्रा-हमण पण अडसट तीर्थमां अटन करतो यात्रा करीने केटळेक काळे पाछी फर्यों अनुक्रमे तेज अरण्यमां ते आज्यों देवयोगे बावे तेने जोयो, अने ओळख्यो के ' आ मारो जीविनदाता महा उपकारी छे.'



हरहारे, भान मारे देर भविति भाग गरे। गर, भाग मारे भागेंगे कामीन गाप पोपानी भेठ व भाषी, भने भाग गाम मार्ग मनीग्यो सफल यपार के नेपी भाग नपास दर्शन मने थपार रे एम बोलगी ने मोनी बाराणना पगमां परचो. शणवारे उठीने हाथ जोटी निनंति करवा लाग्यो के–' हे स्वामी ! मारे वेर पत्रामी, आपनां पगलां करीने मार्क घर पनित करो. ' ए प्रमाण जिल्लाचार पूर्वक तेने पोताने धेर लड गयो. मुग्र बाह्मण तेना चाडु वचनी सांभळीने प्रसन्न थड् विचा-रवा लाग्यो के-' आ तो अन्यंत गुणग्राही जणाय हो, पारा करेला उपकारने भूली गयो नथी, तेथी खानदान कुळतो जणाय छे-आनी पासे मारे घा मोट आंतरु राखवुं जोडए ? आ मारुं सर्व काम करी आपके; माटे बाचे आपेला सर्व अलंकारी हूं आने ज देखाई-आना ज द्यायमां आधीने तेतुं रोकड नाणुं करुं. ' एम विचारीने ते वोल्यो के-' हे भाड! मारी पासे कोटए आपेलां घरेणां छे, ते वेचीने मने नाणां करी आप. ' सोनी वोल्यो—' मने वतावो, एटले आपतुं कार्य हुं शीरसाटे करी आपीश. वान्यणे ते सर्व घरेणां तेने वताव्यां-ते जोड़ने सोनीए तेने ओळख्यां के-' अहो ! राजगादीने योग्य थ-येलो राजकुमार वक्र शिक्षावाळा अश्ववडे दूर वनमां लड् जवायो हतो, त्यां तेने कोइए मारी नांख्यो हतो. तेने माटे राजाए घणी शोध करी, पण हजु सुधी कांइ पण पत्ती लाग्यो नथी तेथी राजाए पटह वगडा-च्यो छ के-जे कोइ कुमारना जीववानी के मरणनी शोध करी लावशे तेना पर हुं घणो प्रसन्न थइश, अने मोडं इनाम आपीश आ प्रमाणे



आव्या. राजाए मात्र नजरे जोइने ज तेनो वध करवानी आज्ञा करीः त्यारे राज सेवको ते बाह्मणनुं अर्धु मस्तक मुंडावी, गधेडापर वेसाडी, मारता मारता नगरमां फेरववा छाग्याः ते वखते ब्राह्मण मनमां विचार करवा लाग्यो के-' में वाघ विगेरे त्रणेतुं वचन मान्धुं नहीं, तेतुं फळ मने मळ्युं. ' आ प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेवामां तेने हक्षपर वेटेला पेला बांदराए जोयो अने ओळख्यो, तेथी ते विचारवा लाग्यो के-' अहो ! आ तो अमारा त्रणेनो उपकारी छे, तेनी आवी अवस्था केम थइ ? ' पछी ते वानरे छोकोना कहेवापरथी वधी वात जाणीने विचार्यु के-' खरेखर आ बाह्मणने पेला सोनीए ज दुःखमां नांरुयो जणाय छे, अने ते ज आने मराधी नांखशे. माटे आ ब्राह्मण कीइ उपायथी जीवे एम करुं. ' एम विचारतो ते वानर सर्प पासे गयो, अने तेने सर्व हत्तांत क्यो. ते सांभळी सर्प बोल्यो- विता न कर, सर्व सारुं थशे. ' एम कहीने ते सप राजाना जद्यानमां जडने राजाना कुळना बीजरूप कुमारने हस्यो तरत ज ते कुमार शवनी जैम चेतना रहित यहने पृथ्वीपर पडची. राजपुरूपोए बूमो पाडतां पाडतां राजा पासे जड़ने कहां. राजा पण 'हवे शुं करबं ?' ए विचारमां मूह बनी गयो. अनेक मंत्रवादीओने बोलाव्या तेमणे पोताना भंत्रवळथी जळतं मार्जन विगेरे कर्ये, परंत ते सर्व नप्रंसकने विषे तरुणीना विलासनी जेम निष्फळ थयुं. राजाना चारे हाथ हेटा पटचा. राजा निराज्ञ थयो अने विलाप करवा लाग्यों। ते वस्तते कोइए कहुं के-'ह स्वामी! नगरमां पटह बगडाववो एटले कोइ पण गुणवान् मळी आवशे. 'ते

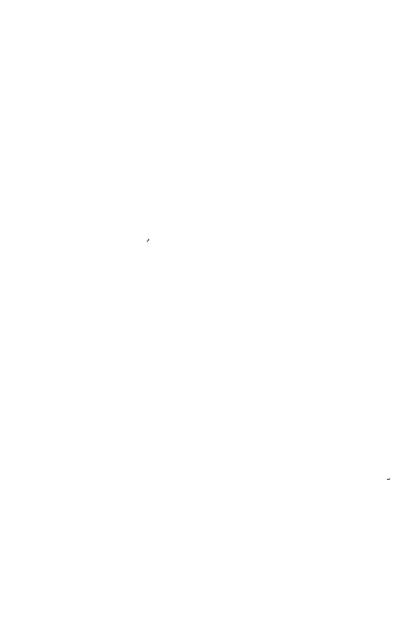














J* . 12

4

>